बुद्धवर्ष २५४४, चैत्र पूर्णिमा, ८ अप्रेल, २००१ वर्ष ३० अंक १०

धम्मवाणी

उपकारो च यो मित्तो, सुखे दुक्खे च यो सखा।
अत्थक्खायी च यो मित्तो, यो च मित्तानुकम्पको॥

– दी०नि० सिङ्गालसुत्त - १६

मित्र (वही है) जो उपकारक होता है, सुख-दुःख में सखा(बना) रहता है, जो हितवादी होता है और सदैव अनुकंपक होता है।

अभिन्न मित्र यशपाल जैन

श्री यशपालजी मेरे घनिष्टतम मित्रों में से एक थे। पिछले चालीस वर्षों तक उनसे मेरी अंतरंग मैत्री अक्षुण्ण बनी रही है। अखिल ब्रह्मदेशीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में जब वे पहली बार श्री विष्णुभाई के साथ बर्मा आए तो यों लगा जैसे दोनों से मेरा पुराना परिचय है। आते ही दोनों मुझसे और मेरे परिवार से ही नहीं बल्कि डॉ. ओमप्रकाश, श्री गौतम भारद्वाज आदि मेरे साथियों और उनके परिवारों से भी इसी प्रकार घुलमिल गये। कि सी को पराए जैसे नहीं लगे।

ये दोनों हिंदी के मूर्द्धन्य साहित्यकार जब-जब बर्मा आए, साथ ही आए और जब-जब आए वहां के हिंदी भाषी समाज को नया जीवन प्रदान कर, प्रेरणा की पावन गंगा बहाते हुए आए। अब न डॉक्टर ओमप्रकाशजी रहे, न उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सत्यभाषिणी देवीजी और न श्री गौतम भारद्वाज। हमारे अन्य अनेक समवयस्क संगी-साथी भी चल बसे। लेकिन आज भी बर्मा में जो हिंदी प्रेमी हैं वे यशपालजी को सदा श्रद्धापूर्वक स्मरण करते रहेंगे। उनका खिला हुआ हंसमुख चेहरा, मुस्कराती हुई आंखें मेरे स्मृतिपटल पर भी बार-बार उभरती रहती हैं। खुशमिज़ाजी का ऐसा सहज स्वभाव बहुत कम लोगों को नसीब होता है। वे केवल स्वयं ही प्रसन्नचित्त नहीं रहते थे, वरण जो भी उनसे मिलता, उसकी भी उदासी दूर कर देते थे। उन जैसे प्रफुल्ल-हृदय व्यक्ति के पास जाकर कोई उदास रह ही नहीं सकता था।

मैं अपने व्यापार धंधे के लिए पश्चिमी देशों की यात्रा करता तो आते या जाते समय जब-जब एक-दो दिन दिल्ली रुकता तब-तब सस्ता साहित्य मंडल के कार्यालय में उनसे अवश्य मिलने जाता। वे सदा मुस्कराते हुए मिलते। हर बार वे मुझे अपने किसी-न-किसी साहित्यिक मित्र से मिलाते। भारत के मूर्द्धन्य हिंदी साहित्यकारों से मिलकर मन प्रसन्न होता।

एक बार की यात्रा में वे मुझे राष्ट्रकवि मैथिलीशरणजी गुप्त से मिलाने ले गये। सेठ गोविंददास भी साथ थे। "दद्दा" से मिलकर मन अत्यंत प्रसन्न हुआ। मांडले (बर्मा) रहते हुए विद्यार्थी जीवन में उनकी प्रसिद्ध कृति 'भारत भारती' मेरी पाठ्यपुस्तक थी। उदात्त राष्ट्रीय चेतना जगाने वाली इस बहुमूल्य पुस्तक का मेरे मानस पर चिरस्थायी प्रभाव पड़ा, जो कि मेरे जीवन को सतत प्रेरणा देता रहा। यशपालजी के कारण मैं उनसे मिल सका। इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूं।

हिंदी के विद्वानों से मिलाने का एक और महत्त्वपूर्ण अवसर उपस्थित हुआ। बर्मा हिंदी साहित्य सम्मेलन के किसी एक वार्षिक अधिवेशन में बर्मा के तत्कालीन प्रधानमंत्री ऊ नू प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मैंने अपने अध्यक्षीय भाषण में उनसे निवेदन किया कि बरमी सरकार ने भगवान बुद्ध की मूल वाणी के संकलन तिपिटक को और उसके भाष्य तथा टीकाओं को बरमी लिपि और पालि भाषा में तथा उनका अनुवाद बरमी भाषा में प्रकाशित करके ऐतिहासिक महत्त्व का काम किया है, असीम पुण्य का काम किया है। परंतु इसका लाभ केवल बरमी जनता को मिलता है। भारत की हिंदी भाषी जनता अपने देश की इस पुरातन धर्मसंपदा से सर्वथा वंचित है। अतः हमारा निवेदन है कि बरमी सरकार इस अनमोल साहित्य का हिंदी अनुवाद भी करवाए।

प्रधानमंत्री इस निवेदन से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने हमारा प्रस्ताव अपने मंत्रिमंडल की बैठक में रखा और दो सप्ताह के भीतर मुझे सूचना दी कि बरमी सरकार ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। वह इस निमित्त आवश्यक धन प्रदान करेगी। परंतु इस स्वीकृति के साथ एक शर्त यह थी कि वे इस योजना के लिए विदेशी मुद्रा बिल्कुल नहीं दे सकेंगे। सारा अनुदान बरमी मुद्रा में ही दिया जायगा।

अब मुझे इस कार्य के लिए भारत में हिंदी और पालि के ऐसे विद्वानों से संपर्क करना आवश्यक हो गया जो कि कुछ वर्ष बरमा में रह कर इस विशद कार्य को पूरा कर सकें। यह तो स्पष्ट था कि उनकी वेतन का कुछ भाग उन्हें भारत में देना होगा। अतः मुझे इसकी भी व्यवस्था करनी थी। इस निमित्त एक बरमी सरकारी प्रतिनिधि मंडल के साथ मैं भारत आया।

भारत आकर दिल्ली में यशपालजी से मिला। उन्होंने तुरंत एक मूर्द्धन्य विद्वान को टेलीफोन कर के बुलाया। वे थे डॉ. भरतसिंह उपाध्याय जो कि पालि, हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी के शीर्षस्थ विद्वान थे। यशपालजी ने मेरी समस्या उनके सामने रखी। मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि यशपालजी के आग्रह पर उन्होंने बर्मा जाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। तदनंतर अन्य विद्वानों से बातचीत करनी आसान हो गयी। यद्यपि किन्हीं कारणों से यह योजना सफलीभूत न हो सकी, लेकिन इस पुण्य कार्य में भाई यशपालजी का जो योगदान रहा, उसे मैं कभी नहीं भूलता।

विपश्यना के प्रति सहयोग

जून १९६९ में जब मैं बर्मा से भारत आया तो लंबे समय तक यहां रहने के लिए आया। पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की एक महती धर्मकामनाथी। दो-ढाई हजार वर्ष पूर्व विपश्यना की अनमोल विद्या बर्मा को भारत से प्राप्त हुई थी। इसे बर्मा के साधक भिक्षुओं ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी अर्वाचीन कालतक शुद्ध रूप में संभाल कर रखा। यह विद्या आज भारत में विलुप्त हो चुकी है। इसलिए वहां अशांति है। जाति-पांति तथा ऊंच-नीच के भेदों को लेकर, संप्रदाय-संप्रदाय के पारस्परिक विग्रह को लेकर वहां रोज कलह-विवाद और खून-खराबा होता रहता है। इस विद्या को अपना कर भारत सुखी हो जायगा। झगड़े-फसाद स्वतः बंद हो जायेंगे। भारत से जो अनमोल विद्या मिली, उसे हमें भारत को लौटानी है। पूज्य गुरुदेव कहतेथे कि यह ऋणउन्हें स्वयं अदा करनाहै। परंतु किसी कारणसे वे भारत नहीं आ सके ।जब मेरा आना निश्चित हुआ तो उन्होंने यह उत्तरदायित्व मुझे सौंपा। मैंने गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य की ।मुझे भी तो अपने गुरु का ऋणचुकानाथा। परंतु मेरे मन में बहुत बड़ी झिझक यह थी कि भारत में विपश्यना के शिविर लगाने में मैं कैसे सफलहो सकूंगा। यद्यपि विपश्यना यहां की बहुत पुरातन विद्या है किन्तु पिछले दो हजार वर्षों से लुप्त हो जाने के कारण लोग इसका नाम तक भूल चुके हैं। अतः वर्तमान भारत के लिए यह विद्या बिल्कुल नई है। दूसरी कठिनाई यह कि इसे सीखने के लिए दस दिन का शिविर लगाना होगा, जहां शिविरार्थियों को रात-दिन मेरे साथ रहना होगा। यह कैसे संभव होगा? एक तो दस दिनों के लिए कोई इस नई विद्या को सीखने के लिए मेरे पास आयेगा ही क्यों? मैं कोई गेरुआ वस्त्रधारी गृहत्यागी भी नहीं कि जिसके आकर्षणसे लोग आएं। और यदि कुछ लोग आने के लिए तैयार हो भी जायँ तो शिविर की व्यवस्था कौन करेगा? इसके लिए आवश्यक स्थान मिलना, निवास और खान-पान आदि का प्रबंध करना तथा अन्य अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करना सरल नहीं था। जैसे-तैसे मुंबई और दक्षिण भारत में दो शिविर लग सके ।परंतु उत्तर भारत में अधिक कठिनाई दीख रही थी। यहां मुझे जानने वाले गिनती के ही लोग थे। मैं यह समस्या लेकर यशपालजी से मिला। वे तुरंत समझ गये कि मैं व्यापार-धंधे से पूर्णतया निवृत्त होकर इस शुभ कार्यमें इसीलिए लग रहा हूं कि इस विद्या से जैसे मेरा कल्याण हुआ वैसे ही मुझे अनेक लोगों का अमित कल्याण होता दीखता है और दूसरे इसमें संलग्न होकर मैं अपने गुरुदेव के ऋणसे भी मुक्त हो सकता हूं। यशपालजी शिविर लगाने की कठिनाइयों को भी भलीभांति समझ रहे थे।

वास्तविक मित्र की मित्रता तभी प्रमाणित होती है जबकि वह आवश्यकता के समय मदद करे।इस मापदंड से यशपालजी की मित्रता पूर्णतया प्रमाणित हुई। वे समझ गये कि इस समय उत्तर भारत में विशेषतः राजधानी दिल्ली में विपश्यना का शिविर लगाने के लिए मुझे उनकी सहायता नितांत आवश्यक है। अतः मित्रधर्म निभाने के लिए वे इस काममें तत्काल जी-जान से जुट गये। दिल्ली में उनके अनेक परिचित थे, फिर भी दस दिन शिविर लगाने के लिए उपयुक्त स्थान मिलना आसान नहीं था। प्रयत्न करते-करतेअंततः वे सफल हुए। दिल्ली में बिड़ला मंदिर के प्रबंधकों ने स्वीकृति प्रदान की। स्थान मिल जाने पर शिविर के प्रबंध में भी वे स्वयं लग गये। शिविर सुचारुरूप से संचालित होकर सफलतापूर्वकसंपन्न हुआ।

बर्मा से भारत आने के तीसरे महीने में ही यह शिविर लगा। इसके बाद तो अपने आप शिविरों का तांता लग गया। शिविर लगाने के लिए किसी से आग्रह नहीं करना पड़ा। विपश्यना अपने आप में एक ऐसी विद्या है जो एक बार आरंभ हो जाय तो स्वतः प्रवाहमान हो उठती है। यह अंधविश्वास और सांप्रदायिक बंधनों से सर्वथा मुक्त है, पूर्णतया बुद्धिसंगत है, वैज्ञानिक है और सबसे बड़ी विशेषता है इसका आशुफलदायिनी होना। जो भाग लेते हैं उन्हें शारीरिक ,मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्रत्यक्ष प्राप्त होते हैं। अतः उनमें से अनेक अपने स्वजन-परिजनों और मित्र-बंधुओं के लिए शिविर लगाने का आग्रह करने लगते हैं और उनमें से कई अगले शिविरों के प्रबंध का उत्तरदायित्व वहन करनेके लिए सहर्ष तत्पर हो जाते हैं। इस प्रकार यह विद्या पिछले ३१-३२ वर्षों में भारत ही नहीं, विश्व के सभी प्रमुख देशों में अनायास प्रसारित होती गयी और विभिन्न वर्गों और संप्रदायों के लाखों लोगों के कल्याण का कारण बनती गयी। आज भी तीव्रगति से इसका स्वतः प्रसार हो रहा है।

वास्तविक कठिनाइयां प्रारंभिक शिविरों के संयोजन में ही थी। अतः उन शिविरों का विशिष्ट महत्त्व था। जो-जो मित्र उन प्रारंभिक शिविरों के व्यवस्थापन में सहायक हुए, उनमें यशपालजी प्रमुख थे। उनके इस पुण्य कार्य को स्मरण कर उनके प्रति मन में प्रभूत मंगल मैत्री जागती है।

यशपालजी के बलयह एक प्रारंभिक शिविर लगा कर ही नहीं रह गये। वे आजीवन विपश्यना के प्रबल पक्षधर बने रहे। विष्णुभाई के साथ वे शीघ्र ही डलहौजी में एक शिविर में स्वयं सम्मिलित हुए। तदनंतर अन्य अनेकों को भी प्रोत्साहित करते रहे।

तेरा पंथ

यशपालजी तेरापंथीय अणुव्रत आंदोलन के अध्यक्ष थे। अतः आचार्य तुलसी और मुनि नथमल (अब आचार्य महाप्रज्ञ) से उनका घनिष्ट संबंध था। बर्मा से आते ही हमारे परिवार के एक निकट संबंधी और आचार्य तुलसी के प्रमुख गृहस्थ शिष्य श्री रामकुमारजी सरावगी के साथ मैं इन दोनों प्रसिद्ध मुनियों से बैंगलोर में मिला था। उस समय उनसे मिलने का भिन्न उद्देश्य था। भारत की पुरातन श्रमण परंपरा की बुद्धानुयायी धारा तो यहां सर्वथा विलुप्त हो चुकी, परंतु जैन धारा अब भी जीवित है। मैं जानना चाहता था कि इसमें किस प्रकार की साधना-विधि प्रचलित है? मुझे यह जान कर दुःख हुआ कि जैनधारा की मूल साधना विधि भी विलुप्त हो चुकी है। वे अन्य परंपराओं की साधनाओं का प्रयोग करकेदेख रहे हैं। परंतु इससे उन्हें संतुष्टि नहीं हुई है।

स्वयं विपश्यना कर लेने के पश्चात यशपालजी ने उन्हें बताया कि विपश्यना श्रमण परंपरा की शुद्ध साधना पद्धति है। इसमें वीतरागता का अभ्यास कराया जाता है। यशपालजी के कहने पर आचार्य तुलसी इसका प्रयोग कर देखने के लिए राजी हो गये। इस निमित्त पहला शिविर महरौली (दिल्ली) के 'अध्यात्म साधना केंद्र' में लगा। मुनि नथमलजी सहित अनेक साधु-साध्वियों ने भाग लिया। शिविर आरंभ करते हुए इस साधना की कठोर अनुशासन संहिता को लेकर कुछेक कठिनाइयां उत्पन्न हुईं। परंतु यशपालजी के समझाने और मुनि नथमलजी की उदारता के कारण ये कठिनाइयां सहज ही दूर हो गयीं। उन्होंने शिविर के सारे नियम और अनुशासन स्वीकार कर लिये। शिविर समापन पर वे अत्यंत संतुष्ट प्रसन्न हुए। उन्होंने यशपालजी के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी को एक संदेश भेजा। आचार्यश्री दिल्ली शहर के किसी उपाश्रय में विराज रहे थे। मुनि नथमलजी यहां से पैदल चल कर जाते तो दूसरे दिन ही पहुँच पाते। यशपालजी मेरे साथ कार में बैठ कर घंटे भर में ही आचार्यश्री से मिलने वाले थे। अतः मुनि नथमलजी चाहते थे कि आचार्यश्री को उनका यह संदेश शीघ्र ही मिल जाय। संदेश था –

"श्रमण परंपरा की ही साधना होने के कारण जिसे हम रुपये में बारह आने अनुकूल होने की संभावना लेकर सम्मिलित हुए थे वह सत्रह आने अनुकूल निकली।(यानी ७५% अनुकूल होने की आशा के स्थान

→ (शेष पृ. ४ पर)

भिक्षुणी आचार्य :Ven Bhikkhuni Heng Ding, Taiwan

नए उद्दरदायित्त्व : आचार्य

१. श्री एस. अडवियप्पा : 'धम्मपत्तन' (विपश्यना पगोडा) मुंबई की सेवा
२. श्री मुकुंद एवं श्रीमती विमला बदानी, 'धम्मगङ्गा' कलकत्ता के साथ उड़ीसा और प. बंगाल की सेवा
३. श्री प्रकाश एवं श्रीमती शुभांगी बोरसे, 'धम्मसरोवर' धुळे की सेवा
४. श्री बलराज चड्ढा, धर्मप्रसारण की सेवा
५. डॉ. धनंजय चौहान, मुख्याचार्य पू. गुरुदेव की सेवा
६. डॉ. राजेंद्र चोखानी, विपश्यना पर शोधकार्य
७. कु. प्रीति डेढिया, धम्मगिरि पर कम्प्युटर विभाग एवं महाराष्ट्र में बालशिविरों की सेवा
८. प्रोफे. प्यारेलाल एवं श्रीमती सुशीला धर, 'धम्मतिहाड़', 'धम्मरक्खक' दिल्ली एवं 'धम्मसिखर' धर्मशाला की सेवा तथा जेल एवं पुलिस शिविर के शोधकार्य
९. श्री काश्यप एवं श्रीमती कमला धर्मदर्शी, 'धम्मदिवाकर' मेहसाणा की सेवा
१०. श्री बालकृष्ण गोयन्का,'धम्मखेत्त' हैदराबाद एवं 'धम्मसेतु' चेन्नई के साथ आंध्रप्रदेश एवं तमिलनाडु की सेवा
११. श्री चोथमल गोयन्का,'धम्मसुमन' बैंगलोर तथा कर्नाटक की सेवा
१२. श्री राधेश्याम गोयन्का, प्रकाशन, तिपिटक सीडी-रोम, इंटरनेट(भारत) तथा 'धम्मतपोवन' इगतपुरी की सेवा
१३. श्री शेरसिंह एवं श्रीमती विमलाकुमारी जैन, 'धम्मसलिल' देहरादून तथा राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के जेल-शिविरों की सेवा
१४. श्री महासुख एवं श्रीमती मंजु खंधार, विपश्यना पगोडा (मुंबई) के निर्माणकार्य में तालमेल तथा भारतीय स. आचार्यों को भारत तथा विदेश में शिविर-नियोजन में सहयोग करना।
१५. श्रीमती ऊषा मोडक,'धम्मानन्द', 'धम्मपुण्ण' पूना; 'धम्मालय' कोल्हापुर तथा गोवा, कोंकण एवं पश्चिम महाराष्ट्र की सेवा
१६. श्री नटवरलाल एवं श्रीमती कौशल्या पारिख, धर्मप्रसारण की सेवा
१७. श्री मनहर पटेल, 'धम्मपीठ' अहमदाबाद एवं गुजरात के जेल-शिविरों की सेवा
१८. श्री नारायण एवं श्रीमती रमा पाटिल, 'धम्मअजन्ता' औरंगाबाद, 'धम्मवटी' नाशिक, 'धम्ममनमोद' मनमाड के साथ मराठवाडा की सेवा
१९. श्री शशिकांत एवं डॉ.(श्रीमती) शारदा संघवी तुलनात्मक अध्ययन तथा डॉ. (श्रीमती) शारदा संघवी –'विपश्यना विशोधन विन्यास' की निदेशक के रूप में सेवा
२०. श्री लक्ष्मीनारायण राठी, धर्मप्रसारण की सेवा
२१. डॉ. भीमसी एवं श्रीमती पुष्पा सावला, 'धम्मसिन्धु' बाड़ा तथा कच्छ की सेवा
२२. श्री प्रेमजी एवं श्रीमती मधु सावला, 'धम्मगिरि' इगतपुरी की सेवा
२३. श्री अरुण एवं श्रीमती कमला तोषणीवाल, 'धम्मगिरि' इगतपुरी की सेवा
२४. कु. शांति शाह, धर्मप्रसारण की सेवा
२५. श्री सुधीर एवं श्रीमती माधुरी शाह, 'धम्मनाग', 'धम्मसुगति' नागपुर; 'धम्मकानन' बालाघाट; 'धम्मकेतु' भिलाई तथा छत्तीसगढ़ एवं विदर्भ की सेवा
२६. श्री बचुभाई शाह, दक्षिण गुजरात में धर्मप्रसारण की सेवा
२७. श्री गुरुमुख एवं श्रीमती हंस सिधु, 'धम्मधज' होशियारपुर तथा पंजाब की सेवा
२८. श्री रामसिंह एवं श्रीमती जगदीशकुमारी सिंह, केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों में विपश्यना की पहुँच कराना, धर्म-प्रशिक्षण तथा प्रशिक्षण संबंधी सामग्री उपलब्ध कराना और 'धम्मसोत', 'धम्मपट्ठान' हरियाणा; तथा दिल्ली और हरियाणा के अकेंद्रीय शिविरों की सेवा
२९. श्री विमलचंद सुराना, 'धम्मथली' जयपुर तथा राजस्थान की सेवा
३०. श्री सत्येंद्रनाथ एवं श्रीमती लाज टंडन, भिक्षुसंघ की सेवा, धर्मसाहित्य निर्माण में सहयोग तथा विश्व स्तर पर बाल-शिविरोपयोगी सामग्री उपलब्ध कराने की सेवा
३१. श्री जयंतीलाल एवं श्रीमती कमला टक्कर, 'धम्मकोट' राजकोट तथा सौराष्ट्र की सेवा
३२. डॉ. नारायण एवं श्रीमती शारदा वाधवानी, रतलाम एवं इंदौर की सेवा
33. Mr. John & Mrs Gail Beary; To serve 'Dhamma Kamala' & 'Dhamma Abha' Thailand, Indonesia and Korea, and Traing of assistant teachers in North America.

नवनियुक्त : आचार्य

१. श्रीमती इलायचीदेवी अग्रवाल, दीर्घ एवं विशेष शिविरायोजन की सेवा
२. श्रीमती सज्जनदेवी धाड़ीवाल, दीर्घ एवं विशेष शिविरायोजन में सहयोग की सेवा
३. श्रीमती वीणा गांधी, दीर्घ एवं विशेष शिविरायोजन में सहयोग की सेवा
४. श्रीमती गीता केडिया, दीर्घ एवं विशेष शिविरायोजन में सहयोग की सेवा
५-६. श्री अशोक एवं श्रीमती उमा केला,'धम्मपाल', भोपाल की सेवा
७-८. श्री श्यामसुंदर एवं श्रीमती कांता खद्दरिया, 'धम्मचक्क', वाराणसी, 'धम्मसुवत्थी' श्रावस्ती, 'धम्मविमुत्ति' कुशीनगर, 'धम्मलक्खण' लखनऊ, 'धम्मबोधि' बोधगया, 'धम्मलिच्छवी' वैशाली, 'धम्मउपवन' बाराचकिया तथा उत्तर प्रदेश, बिहार एवं झारखंड की सेवा
९-१०. श्री रतिलाल एवं श्रीमती चंचल सावला, दीर्घ एवं विशेष शिविरायोजन की सेवा
११. डॉ. रोहिदास शेट्टी, अंग्रेजी न्यूजलेटर (धम्मगिरि) एवं सहा. आचार्य पुस्तिका प्रायोजित कराना.
१२. श्री एल. शिवप्पा, केरल की धर्मसेवा
१३-१४. श्री राजेंद्र एवं श्रीमती ऊषाकुमारी सिंह, ऐतिहासिक शोध की सेवा
१५. श्री जयेश सोनी, 'धम्मगिरि' एवं 'धम्मतपोवन' के शिविर-व्यवस्थापन की सेवा
१६. श्री श्यामसुंदर तापड़िया, 'धम्मसरिता' खड़ावली की सेवा
१७-१८. श्री रामअवध एवं श्रीमती सुशीला वर्मा, बरमी साहित्य के हिंदी अनुवाद की सेवा
19. Mr Itagaki Atsushi, To serve Japan

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री नारायण चंद्र विश्वास
२. श्रीमती बृजबाला चावला
३. श्रीमती राधादेवी डालमिया
४. श्री दिलीप देशपांडे
५. श्री चम्पालाल खिंवसरा
६. श्रीमती पुष्पा माखरिया
७. डॉ. निखिल मेहता
८. श्रीमती सुशीला पई
९. कु. नलिनी पारुळेकर
१०. श्री दीपचंद शाह
११. डॉ. एन.पी. सुब्रह्मणियम
१२. श्री अशोक तलवार
१३. श्री जयकुमार टीबड़ेवाल
१४. श्री शिवजीभाई विकमसी
15. Dr. Amnat Apichatvullop

नव नियुक्तियां : सहायक आचार्य

१. श्रीमती सबरीना कटकम, सिकंदराबाद
२. श्री रवजीभाई बारोट, साबरकांठा, (गुज.)
३-४. डॉ. हमीर एवं श्रीमती निर्मला गानला, पुणे
५. श्रीमती सुभद्रा खन्ना, जयपुर
६. श्री जितेंद्र शिरोळकर, कोल्हापुर
७. श्री शिवजी जाधव, कोल्हापुर
8. Ms Barbara Luxton, Canada
9-10. Mr Ittiporn & Mrs Monta Thong-Innate, Thailand

बाल-शिविर शिक्षक

1. Ms Nate Thong-Innate, Thailand

भिक्षु प्रशिक्षण कार्यशाला

पूज्य गुरुदेव के तत्वावधान में धम्मगिरि पर ६ से १४ फरवरी तक 'भिक्षु प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन हुआ, जिसमें पंद्रह वरिष्ठ भिक्षुओं ने भाग लिया। इनमें इन्हें धर्म के गंभीर पहलुओं को समझाने के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में विपश्यना का प्रचार-प्रसार करने की प्रणाली से भी अवगत कराया गया। इन्हें पालि भाषा का प्रारंभिक ज्ञान कराने के साथ भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित भिक्षु नियमों की जानकारी विशेषरूप से दिलायी गयी।

कार्यशाला के समापन पर भिक्षुओं ने यह आयोजन अत्यंत लाभप्रद बतलाते हुए भविष्य में भी ऐसी कार्यशालाएं लंबी अवधि के लिए आयोजित किये जाने की मांग की।

पर इसे शतप्रतिशत से भी अधिक अनुकूलपाया।)"

यशपालजी भी यह सुन करबहुत प्रसन्न हुए और मैं भी। आचार्यश्री ने जब सुना तो वे भी अत्यंत प्रसन्न हुए। इसी कारणउन्होंने विपश्यना के तीन और शिविर लगवाये। एक दिल्ली के साधना केंद्रमें ही और दो लाडनूं की'जैन विश्व भारती' में। इन शिविरों में तेरापंथ के सैंकड़ोंसाधु-साध्वियां और साध्वी बनने काप्रशिक्षण ले रही बीसियों प्रशिक्षाणार्थिनियों ने भाग लिया और लाभान्वित हुईं। इनमें से एक मुनि, दो साध्वियों और एक प्रशिक्षाणार्थिनी युवती कीआशातीत प्रगति देख करमेरा मन अत्यंत प्रसन्न हुआ। ध्यान कीये अवस्थाएं अधिकतरदीर्घकालीनशिविरों में प्राप्त होती हैं। यशपालजी भी यह जानकरप्रसन्न हुए।

यशपालजी और विष्णुभाई की धर्मपत्नियां भी शिविरों में सम्मिलित होकरलाभान्वित हुईं। अधिक से अधिक लोग इस कल्याणी विद्या कालाभ उठा सकें इस निमित्त यशपालजी ने विपश्यना पर अनेक प्रेरणाजनक लेख लिखे। 'विपश्यना विश्व विद्यापीठ' द्वारा जो पुस्तकें प्रकाशितहोती गयीं, उनमें शुद्ध सार्वजनीन धर्म कोआख्यात हुआ देख करयशपालजी ने 'सस्ता साहित्य मंडल' कीओर से भी उन्हें प्रकाशित करने की अनुमति मांगी, जो कि उन्हें सहर्ष दे दी गयी। परिणामत: हमारी अनेक पुस्तकों का मंडल ने भी प्रकाशन किया। इनसे प्रेरणा पाकर अनेक पाठक साधना के लिए उत्सुक हुए और शिविरों में सम्मिलित हुए। इस प्रकारविपश्यना के प्रचार-प्रसार में यशपालजी का बहुत बड़ा हाथ रहा।

जब कभीभारत में विपश्यना के पुनरागमन का इतिहास लिखा जायगा तब उसमें यशपालजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका का सराहनापूर्ण वर्णन अवश्य होगा। इन कल्याणकारीसेवाओं के महान पुण्यबल के कारण शरीर छोड़ करवे ऊर्ध्व लोक में जहां कहींभी जन्मे हैं वहां अत्यंत सुख और शांतिपूर्वक रहें। अध्यात्म के क्षेत्र में उनकीउत्तरोत्तर उन्नति होती रहे! उनकासर्वविधि मंगल हो, कल्याणहो! उनकीस्वस्ति हो, मुक्ति हो! यही कल्याण-कामना है।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

दोहे धर्म के

संपद-मीत अनेक हैं, विपद-मीत सो मीत।
स्वजन पराए की सदा, विपदा परखे प्रीत॥

जो अपने कल्याण में, सदा सहायक होय।
धर्मपंथ पर साथ दे, सही मित्र है सोय॥

मित्र वही जो कष्ट में, देवे हाथ बढ़ाय।
मित्र वही जो प्यार से, गलती देय बताय॥

मत दुर्जन का संग कर, दुर्जन दुखकर होय।
पुण्यकर्म क्षय-क्षीण हो, पाप प्रवर्धित होय॥

सतसंगत मंगलकरण, सतसंगत सुख-मूल।
सतसंगत जागे धरम, उखड़े पाप समूल॥

कभी न मन अभिमान हो, हो मित्रों का मान।
ऐसे सुखी गृहस्थ का, घर हो स्वर्ग समान॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
-४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
-४८६१९०, • दिल्ली- २९१११८५,• पटना- ६७१४४२, • वाराणसी- ३५२३३१,
• बैंगलोर- २२१५३८९,• चेन्नई- ४९८२३१५, • कलकत्ता२४३४८७४
कीमंगल कामनाओंसहित

दूहा धरम रा

विपदा मँह ही मीत की, सही परिच्छा होय।
हुवै सहायक कस्ट मँह, मीत साचलो सोय॥

जो सुख मँह ही मीत है, दुख मँह ले मुँह मोड़।
इसै स्वारथी मीत की, संगत करनी छोड़॥

जो मंगळमय पंथ पर, साथी ह्वै सो मीत।
साथ न देवै धरम मँह, बीं स्यूं मत कर प्रीत॥

धरमकरम मँह संग रवै, रवै पाप स्यूं दूर।
बीं की संगत सुखमयी, मंगळ स्यूं भरपूर॥

दुख की घड़ियां मीत ही, सही सहायक होय।
केवल सुख मँह संग रवै, कपटी दुरजन होय॥

संगत साचै मीत की, सुखदायी ही होय।
दुरजन की संगत कर्यां, दुख स्यूं बच्यो न कोय॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स
३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४४, चैत्र पूर्णिमा, ८ अप्रेल, २००१**

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. २५०/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. AR/NSK-46/2000,

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not deliverd please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स : (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
E-mail: <dhamma@vsnl.com>